मन तन वचन लगे तिन उतपन, आस पिया पास बांध्यो विश्वास।
कहे महामती इन भांत तो रंग रती, दई पियाऐं अग्या जाग करूं विलास।। ८ ।।

हे मेरी आत्मा! इस तरह के वचनों को विचारकर अपने तन-मन को शक्तिशाली बनाकर अपने धनी में दृढ़ विश्वास रखो। इस तरह से महामतिजी कहती हैं कि धनी के प्रेम में रंग जाने पर ही धनी की आज्ञा होगी और मैं घर में जाकर धनी से आनन्द विलास करूंगी।

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ १५७ ॥

सनन्ध विरह इस्क वृध की

तलफे तारुनी रे, दुलही को दिल दे।
सनमंध मूल जानके, सेज सुरंगी पर ले।। १ ।।

मैं आपकी युवा अंगना हूं और आपके वियोग में तड़प रही हूं। कृपा करके मुझ दुलहिन को अपना दिल देकर परमधाम का मूल सम्बन्ध जानकर अपने इश्क और प्यार की सेज्या पर स्वीकार करें।

सब तन विरहे खाइया, गल गया लोहू मांस।
न आवे अंदर बाहेर, या बिध सूकत स्वांस।। २ ।।

आपके वियोग ने मेरा शरीर जर्जर कर दिया है। इसमें खून भी सूख गया है। मांस भी गल गया है। अब सांस लेना भी भारी हो गया है।

हाड़ हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल विरह अगिन।
मांस मीज लोहू रगां, या विध होत हवन।। ३ ।।

मेरे तन की सब हड्डियां लकड़ी बन गई हैं। सिर आपके विरह की अग्नि में नारियल बन चुका है। अब मांस मज्जा, खून और नसों को अग्नि में हवन कर देती हूं।

रोम रोम सूली सुगम, खंड खंड खांडा धार।
पूछ पिया दुख तिनको, जो तेरी विरहिन नार।। ४ ।।

मेरे रोम-रोम में आपके विरह के सूए चुभ रहे हैं। तलवार की धार (आपका विरह) से अंग टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं। हे धनी! मैं आपके विरह में आपकी दुःखी अंगना हूं। आप कृपा करके मेरा हाल तो पूछ लो।

ए दरद जाने सोई, जिन लगे कलेजे घाए।
ना दारू इन दरद का, फेर फेर करे फैलाए।। ५ ।।

आपके विरह के दर्द को वही जानता है, जिसके कलेजे में विरह के घाव लगे होते हैं। इस कठोर दर्द की कोई दवा नहीं है। यह तो लगातार फैलता ही जाता है।

ए दरद तेरा कठिन, भूखन लगे ज्यों दाग।
हेम हीरा सेज पसमी, अंग लगावे आग।। ६ ।।

हे मेरे धनी! आपके विरह का दर्द बड़ा कठिन है। आभूषण, जला देने वाली अग्नि के समान लगते हैं। हीरे और सोने के पलंग जिन पर कोमल गद्दा बिछा होता है, वह सुख की बजाय विरह का दुःख बढ़ाते हैं।

Nijanand App

विरहिन होवे पिया की, वाको कोई न उपाए।
अंग अपने वैरी हुए, सब तन लियो है खाए।।७।।

हे धनीजी! जो आपकी ऐसी विरहिणी हो उसका और कोई उपाय नहीं है। उसके अपने ही अंग उसको दुश्मन के समान लगते हैं। विरह के दुःख ने पूर्ण रूप से उसे खा लिया है।

ए लछन तेरे दरद के, ताए गृह आंगन न सोहाए।
रतन जड़ित जो मंदिर, सो उठ उठ खाने धाए।।८।।

आपके विरह के दर्द की हकीकत का बयान किया है। आपकी विरहिणी को घर और आंगन अच्छा नहीं लगता है। रत्नों से जड़े हुए (सब सुख से भरे) घर लगता है कि खाने को आ रहे हैं।

ना बैठ सके विरहनी, सोए सके न रोए।
राज पृथी पांव दाब के, निकसी या बिध होए।।९।।

आपकी विरहिणी को बैठने में, सोने में, किसी तरह से चैन नहीं है। पूरी घर-गृहस्थी की सुख-सामग्री का त्यागकर आपके विरह में भटकती है।

विरहा न देवे बैठने, उठने भी न दे।
लोट पोट भी न कर सके, हूक हूक स्वांस ले।।१०।।

आपका विरह उठने-बैठने नहीं देता है और न लेटने देता है। केवल हाय धनी, हाय धनी की स्वांस चल रही है।

आठो जाम जब विरहनी, स्वांस लियो हूक हूक।
पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक।।११।।

इस तरह से हाय धनी, हाय धनी की रट दिन-रात लग गई, जिससे कठोर दिल वाले सुन्दरसाथ भी नर्म हो गए और साथ निभाने को तैयार हो गए।

ए बिध मोहे तुम दई, अपनी अंगना जान।
परदा बीच का टालने, ताथें विरहा प्रवान।।१२।।

हे मेरे धनी! आपने अपनी अंगना जानकर मेरे दिल में आकर साहस दिया। मैंने यह जो ऊपर के वचनों में विरह किया वह केवल आपके और मेरे बीच में तामस का परदा हो जाने से था। अब वह परदा हट गया।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। १६९ ।।

राग मेंवाड़

विरहा गत रे जाने सोई, जो मिल के बिछुरो होए।
ज्यों मीन बिछुरी जलथें, या गत जाने सोए।।मेरे दुलहा।।
तारुनी तलफे विलखे विरहनी, विरहनी विलखे कलपे कामनी।।टेक।।१।।

हे मेरे धनी! विरह की हकीकत वही जानता है जो मिलने के बाद अलग होता है। जैसे मछली जल से अलग होती है तो विरह का अनुभव उसे होता है। इसलिए, हे मेरे धनी! मैं आपकी युवा अंगना बिलख-बिलखकर विरह में तड़प रही हूं। मैं कामिनी आपके वियोग में कलप रही हूं।

Nijanand App